# पाठ 2. मिट्ठू

## पाठ का उद्देश्य

प्रस्तुत पाठ का उद्देश्य बच्चों को यह बताना है कि जानवर भी हम मनुष्यों की भाँति संवेदनाओं से भरे होते हैं। यदि हम उन्हें प्रेम करते हैं, उनका ध्यान रखते हैं तो वे भी समय पड़ने पर हमारी सहायता करते हैं।

## पाठ का सारांश

शहर में एक सरकस कंपनी आई जिसके पास कई जानवर थे। उन जानवरों में मिट्ठू नाम का एक बंदर भी था। जानवरों को देखने के लिए आने वाले बच्चों में गोपाल नाम का एक बालक भी शामिल था। गोपाल मिट्ठू को रोज़ अच्छी-अच्छी चीज़ें खिलाता। कुछ ही दिनों में उन दोनों में गहरी दोस्ती हो गई। सरकस कंपनी शहर से जाने लगी तो गोपाल को मिट्ठू से बिछुड़ने का खयाल सताने लगा। उसने अपनी माँ से पैसे लिए तथा मिट्ठू को खरीदने के लिए चल पड़ा। वहाँ अचानक चीते ने गोपाल पर हमला करने की कोशिश की तो मिट्ठू ने गोपाल की जान बचाई। मिट्ठू बुरी तरह घायल हो गया। मिट्ठू का इलाज किया गया जिससे वह जल्द ही स्वस्थ हो गया। गोपाल और मिट्ठू के बीच का प्रेम देखकर सरकस कंपनी के मालिक ने बिना पैसे लिए मिट्ठू को गोपाल को दे दिया। गोपाल मिट्ठू को लेकर अपने घर चल आया।

## अध्यापन संकेत

पाठ वाचन से पूर्व पाठ की संक्षिप्त पृष्ठभूमि तैयार करें। बच्चों से उनके पंसदीदा पशुओं के बारे में बात करें। बताएँ कि अब हम जो पाठ पढ़ेंगे उसमें बंदर के बारे में बताया गया है। पाठ का आदर्श वाचन करें। बच्चों से पूछें तथा समझाएँ–

- पूछें, उन्हें यह कहानी कैसी लगी?
- अगर तुम गोपाल की जगह होते तो क्या तुम भी मिट्ठू को अपने घर ले जाते?
- बच्चों को संज्ञा तथा उसके भेद समझाएँ।
- बच्चों को समझाएँ कि पशु-पक्षियों में भी संवेदनाएँ होती हैं।
- समझाएँ कि पशु-पक्षियों को हानि नहीं पहुँचानी चाहिए।

डिजीडिस्क (DigiDisc) के माध्यम से पाठ की ई-बुक विद्यार्थियों को दिखाकर पाठ के प्रत्येक अंग का स्पष्टीकरण कीजिए। गतिविधियों की दुनिया से परिचय भी कराइए।